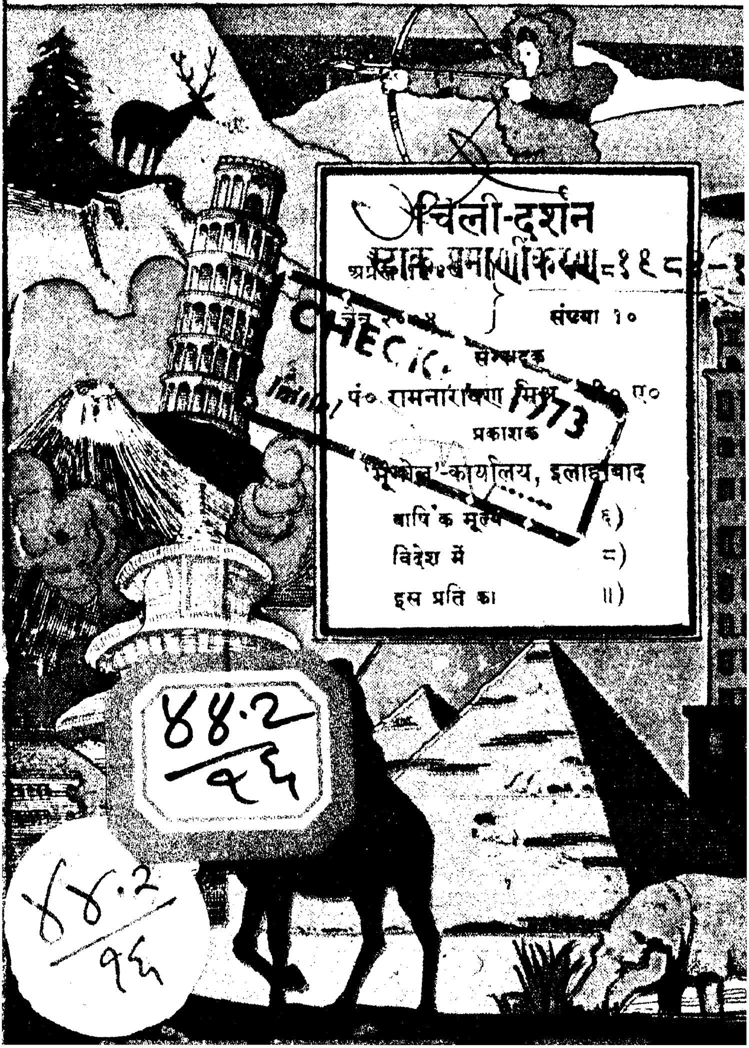
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—८८



विषय-सूची

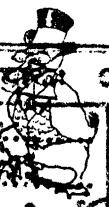
स्थिति

स्थिति, सीमा तथा विस्तार

दक्षिणी अमरीका का चिली प्रजातन्त्र इस महाद्वीप के तीन प्रधान देशों में गिना जाता है। इन्हें प्रायः अंग्रेजी के प्रथम तीन अक्षरों अर्थात् ए, बी, सी (A. B. C.) देश कहते हैं। ए से अर्जेण्टाइना, बी से ब्रेजील और सी से चिली देश का बोध होता है। चिली देश दक्षिणी अमरीका का दक्षिणी-पश्चिमी भाग घेरे हुये है। इस देश की लम्बाई उत्तर में टकना से दक्षिण में हार्न अन्तरीप पर प्रायः ५६ दक्षिणी अक्षांश से १७, १२ दक्षिणी अक्षांश तक २८०० मील है। पर एण्डीज पर्वत और प्रशान्त महासागर के बीच में इसकी औसत चौड़ाई केवल ७० मील है। इस समस्त लम्बाई में पश्चिम की ओर का प्रशान्त महासागरीय तट इसी देश में सम्मिलित है। इसका क्षेत्रफल २,९०००० वर्ग मील है। यह क्षेत्रफल अपने संयुक्त प्रान्त से ढाई गुना बड़ा है। पर इसकी जनसंख्या केवल ४५ लाख है जो हमारे प्रान्त की १% से भी कम है।

क्षेत्रफल के अनुपात से चिली देश का समुद्र-तट कहीं अधिक बड़ा है। समुद्र-तट की अधिकता होने से इस देश को एक बड़ी जल सेना रखनी पड़ती है। इसी से अपने पड़ोसियों से भिड़

जाने और व्यापार बढ़ाने में भी यह देश बहुत प्रसिद्ध है। इन सब बातों से इसे दक्षिणी अमरीका का ब्रिटेन कहते हैं। पर महाद्वीप के पश्चिमी तटपर स्थित होने और पहाड़ी होने के कारण यह उत्तरी अमरीका के केलिफोर्निया प्रान्त से समानता रखता है। इसी से इसे दक्षिणी अमरीका का केलिफोर्निया भी कहते हैं। पर चिली नाम किलुआ चिली का अपभ्रंश मालूम होता है। इसका अर्थ है हिम या बरफ। एण्डीज के ऊँचे ढालों पर बरफ रहने के कारण शायद इस देश का यह नाम पड़ा हो। चिली देश के उत्तर में पीरू देश, इसके पूर्व में बोलिविया और अर्जेण्टाइना देश हैं। इसके दक्षिण और पश्चिम में सब कहीं प्रशान्त महासागर है।



भू रचना

चिली देश का उत्तरी तट एक विशाल स्थल जान पड़ता है। इस ओर पानी के ऊपर तट लम्बवत ६०० फुट से १५०० फुट तक एक दम ऊंचा उठा हुआ है। ६००० फुट ऊंची तटीय पहाड़ी एक भी नहीं है। पर इस भाग में तटीय समतल मैदान का अभाव है। केवल नदियों के मुहानों के समीप नगर बसाने भर के लिए कुछ समतल भूमि मिलती है। वाल्परेज़ों के दक्षिण में भूमि अधिक टूटी-फूटी है। पहाड़ियां अधिक ऊंची होकर पर्वत का रूप धारण कर लेती हैं। चिली द्वीप के दक्षिण में तटीय श्रेणी पानी में डूब गई है। केवल ऊंचे शिखर द्वीपों के रूप में शेष बच गये हैं। इस प्रकार चिली की तटीय श्रेणी एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगातार नहीं चली गई। वास्तव में यह एक पठार के समान है। इसका पश्चिमी तटीय ढाल सपाट और पूर्वी ढाल क्रमशः है। एण्डीज़ पर्वत की प्रधान श्रेणी चिली देश का ठीक एक तिहाई भाग घेरे हुये है। ३० दक्षिणी अक्षांश के पास यह ठीक दो भागों में बंट जाती है। दक्षिणी भाग में इसकी दो श्रेणियां हो गई हैं। वे एक दूसरे के बहुत पास पास हैं। इससे इनके बीच में घाटी का ठीक ठीक विकास नहीं हो पाया है। दक्षिण का पहाड़ी प्रदेश बहुत तंग है। उत्तर की ओर यह अधिक चौड़ा हो गया है। इसकी चौड़ाई यहां औसत से १०० मील है। उत्तर की ओर ऊँचाई

भी बढ़ जाती है। दक्षिणी सिरे पर एण्डीज़ की उँचाई केवल छः सात हज़ार फुट है। उत्तर की ओर एकान्केगुआ की चोटी समुद्र-तल से २३,००० फुट ऊंची है। चिली के मध्य भाग में एण्डीज़ पर्वत को पार करना सुगम हो गया है। यहां पर्वत की चौड़ाई कम है। उनके बीच में नीचे दर्रे हैं। अस्प-लाटा दर्रा केवल १२,७०० फुट ऊंचा है। वालपरेज़ो से ब्यूनाज़ायर्स को जाने वाली रेलवे इसी दर्रे के ठीक नीचे एक सुरंग द्वारा एण्डीज़ को पार करती है। सुरंग की अधिक से अधिक ऊंचाई १०,४६९ फुट है। दक्षिण की ओर दर्रे और भी नीचे हैं। ४० दक्षिणी अक्षांश के पास नाह्वेल ह्वापी दर्रा केवल ४५२० फुट ऊंचा है। दक्षिणी भाग अधिक ठंडा है। नीची होने पर भी इधर की पहाड़ियां बरफ से ढकी हैं। हिमा-गारों ने यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर बना दिया है। पर इस भाग में मनुष्य के काम की बहुत कम चीज़ें मिलती हैं। इस से इस दक्षिणी भाग में बहुत कम लोग रहते हैं। उत्तरी भाग में पानी की कमी है। ३० दक्षिणी अक्षांश के उत्तर में एण्डीज़ पर्वत कई श्रेणियों में वँट गया है। इनमें पश्चिमी श्रेणी चिली की पूर्वी सीमा बनाती है। एण्डीज़ की यही पश्चिमी श्रेणी सबसे अधिक ऊंची है। चिली की दो रेलवे लाइनें इसे पार करती हैं। एण्टोफेगस्टा से आने वाली रेलवे लाइन १२,९५६ फुट की

उंचाई पर इसे पार करती है। एरीका से आने वाली रेलवे लाइन इस १२,६७२ फुट की उंचाई पर पार करती है। यह भाग इतना विषम और सूखा है कि यहां खेती नहीं हो सकती। पानी की कमी से खनिज खोदने में भी कठिनाई पड़ती है।

तटीय श्रेणी प्रधान एण्डीज़ के बीच में तीस चालीस मील चौड़ी एक लम्बी घाटी है। इसकी औसत उंचाई समुद्र-तल से तीन चार हज़ार फुट है। वास्तव में यह घाटी कई निचले आखातों की बनी है। टामारूगल आखात सब से अधिक उत्तर में है। यह लोआ नदी के उत्तर में फैला हुआ है। इस आखात में कुआं खोदने से नीचे पानी निकल आता है। कहीं कहीं पांच छः फुट की गहराई पर ही पानी निकल आता है। दूसरे आखातों में पानी का अभाव है। इन आखातों को पम्पा कहते हैं। इस समय यहां वनस्पति का अभाव है। पर पुराने समय में यहां कंटीला जंगल था उसके चिन्ह यहां मिलते हैं। तारापाका रेगिस्तान टामारूगल के पश्चिमी भाग में स्थित है। चिली देश में जितना शोरा पाया जाता है उसका प्रायः आधा इसी भाग में मिलता है। प्रायः शेष शोरा एण्टोफेगस्टा के समीप मिलता है। कुछ शोरा एटेकामा रेगिस्तान के अधिक दक्षिणी भाग से मिलता है। दक्षिणी भाग में नीची पहाड़ियों का जाल सा बिछा हुआ

है। वालपरेजो के पास से चिली की उपजाऊ घाटी आरम्भ होती है। यह ४० दक्षिणी अक्षांश तक चली गई है। कृषि की उपज के लिये यह संसार की सर्वोत्तम घाटियों में से एक है। इस लम्बी घाटी के अन्त में कुछ झीलें हैं। इन झीलों के द्वीपों के इस देश में मूल निवासी रेड इण्डियन बसे हुये हैं।

इसी देश की नदियां बहुत छोटी हैं। वे नाव चलाने के काम नहीं आती हैं। उनके किनारे बड़े नगर भी नहीं बसे हैं। पर वे सिंचाई के लिये बड़ी उपयोगी हैं। उत्तरी रेगिस्तानी भाग में ६०० मील की दूरी तक एक नदी को छोड़कर कोई नदी समुद्र तक नहीं पहुँचने पाती है। यह कुछ बड़ी नदी लोआ है। इसी में वर्ष भर पानी रहता है। यह चिली की सब से बड़ी (प्रायः २५० मील लम्बी) नदी है। इसके किनारे कुछ उपनिवेश बसे हुये हैं। कोपियापो नदी प्रायः १७० मील लम्बी है। यह कोपियापो उत्तरी रेगिस्तान की दक्षिणी सीमा पर बहती है। पहले यह समुद्र में गिरती थी। पर आज कल इसका जल खेतों के सींचने में खर्च हो जाता है। और यह समुद्र तक नहीं पहुँचने पाती है। दक्षिणी भाग की नदियों के निकास के पास अधिक बरफ है। उनका मार्ग भी सूखा नहीं है। इस लिये इस ओर की नदियां अधिक वेगवती हैं। इनमें से कुछ नदियां बिजली बनाने के काम आती हैं।

चिली–दर्शन

भूगर्भ

चिली देश के भूगर्भ की कथा बड़ी रोचक है। इस देश की भूरचना में एक ऐसा समय था जब यहां केवल तटीय या कार्डिलेरा पर्वत था। आज कल यह पर्वत बहुत घिस गया है। इसकी छोटी छोटी समानान्तर श्रेणियां तट के पास शेष बची हैं। उस समय एण्डीज़ पर्वत नहीं बने थे। उनके स्थान पर कार्डिलेरा के पूर्व में विशाल पम्पासागर था। यह विशाल सागर कार्डिलेरा से मांटिविडियो की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। उस समय अर्जेण्टाइना का प्रजातन्त्र इस समुद्र की तली के नीचे डूबा हुआ था। फिर इस समुद्र की तली में ज्वालामुखी का प्रचंड प्रकोप हुआ। सब कहीं लावा की तहें बिखर गईं। फिर इन तहों के ऊपर बालू (लाल बलुआ पत्थर), जिप्सम और चूने के पत्थर की तहें बिछ गईं। उस समय चिली की घाटी समुद्र के नीचे सब से गहरी खाईं थी। इसके बाद पृथिवी के पपड़े पर दबाव पड़ने से मोड़ दार एण्डीज़ पर्वत प्रगट हुये। इनके साथ ही दो समानान्तर घाटियां बनी। कार्डिलेरा और एण्डीज़ पर्वत के बीच की श्रेणी आजकल मध्य चिली की श्रेणी कहलाती है। एण्डीज़ के पूर्व में लेकसवेली अर्जेण्टाइना का अंग है। कुछ समय के बाद यहां ज्वालामुखी का फिर प्रकोप हुआ।

जहां यह पर्वत पूर्व पश्चिम दिशा में कट गये हैं वहां सोना चांदी और दूसरे बहुमूल्य खनिज पाये जाते हैं। प्रथम १५० वर्ष में स्पेन के सिपाही इस देश में सोने और चांदी के लोभ से ही बने रहे। फिर एंडीज के कंकड़ बालू को लेकर यहां की नदियों ने चिली की घाटी को भर दिया और अत्यन्त उपजाऊ बना दिया। इनका यह कार्य अब भी जारी है। वास्तव में वर्तमान चिली का अस्तित्व मध्य चिली की घाटी की उर्वरता पर निर्भर है। मध्य चिली से एंडीज का दृश्य बड़ा सुन्दर मालूम होता है। उत्तर की ओर इस घाटी का जो भाग ऊंचा उठ गया वहीं टामूरूगल और एटेकामा रेगिस्तानों में शोरा पाया जाता है। दक्षिण की ओर भूमि नीचे डूब गई। यही चिली द्वीप के दक्षिण में भूमि के डूब जाने से फयोर्ड तट बन गया है। पर्वत श्रेणी के ऊंचे भाग असंख्य द्वीप के रूप में शेष बच गये हैं। जिन भागों में पुराने समय में जहां वन नीचे दब गये वहीं कोयले की खाने हैं।



जलवायु

चिली देश के भिन्न भागों की जलवायु भिन्न-भिन्न है। चिली देश की वर्षा प्रशान्त महासागर पर निर्भर है। केवल ठेराडेल फ्यूगो द्वीप में पूर्व की ओर अटलांटिक महासागर से आने वाली हवायें पानी बरसाती हैं। चिली देश के दक्षिणी पश्चिमी तट पर पछुआ तूफानी हवायें चलती हैं। यह दक्षिणी चिली के पश्चिमी तट पर प्रवेश वर्षा करती हैं। फ्यूगिया से वाल्डिविया तक एंडीज के पश्चिमी ढालों पर बहुत ही अधिक वर्षा होती है। एक यात्री का कहना है कि पचास दिन तक इतनी मूसलाधार वर्षा होती रही कि डेरे से बाहर निकलना असम्भव हो गया। इस प्रबल वर्षा से प्रशान्त महासागर में गिरने वाली नदियां उमड़ी रहती हैं। वे बड़े वेग से बहती हैं। अपने उद्‌गम के पास वे एण्डीज के ढालों को इतना गहरा काटती रहती हैं कि प्रशान्त और एण्डीज के बीच का जल विभाजक पीछे पूर्व की ओर हटता रहता है। इससे चिली और अर्जेण्टाइना के बीच में स्थायी सीमा निर्धारित करने में कठिनाई हो जाती है। दर्रों में होकर पानी लाने वाली हवायें पूर्वी ढालों पर भी पहुँच जाती हैं। वहां यह वर्षा करके कुछ घाटियों को हरा भरा कर देती हैं। यहां गाय पाली जाती है। अधिक आगे वर्षा कम हो जाती है। इससे केवल भेड़ें पाली जाती हैं और आगे पूर्व की ओर

पेटेगोनिया का पठार इतना सूखा है कि केवल ग्वानाको और शुतुमुर्ग ही यहां की सूखी घास चर कर जीवित रह सकते हैं। इस प्रकार एण्डीज के पूर्वी ढालों पर गायों और भेड़ों के पालने योग्य चरागाह हैं। हार्न अन्तरीप से वाल्डिविया तक दक्षिणी चिली का समस्त पश्चिमी तट प्रबल वर्षा से इतना भीगा रहता है कि यह सब कहीं बन से ढका है। कहीं कहीं सड़ी घास के दलदल हैं। पर इस ओर कुछ दिन ऐसे भी होते हैं जब तूफानी वर्षा बन्द हो जाती है और आकाश निर्मल हो जाती है। वाल्डिविया तक तो चिली के दक्षिणी भाग में पछुआ हवायें चलती हैं और प्रायः साल भर प्रबल वर्षा करती हैं। वाल्डिविया के आगे उत्तर की ओर इन हवाओं की दिशा बदल जाती है। कुछ दूर तक तो यह दक्षिण-पश्चिम को ओर से आती हैं। फिर यह दक्षिण की ओर से तट के समानान्तर चलती हैं। अन्त में वे दक्षिणी-पूर्वी ट्रेड हवाओं में बदल जाती हैं। चाहे वे दक्षिण की ओर से तट के समानान्तर चलें चाहें वे दक्षिण-पूर्व की ओर से चलें वे उत्तरी चिली के पश्चिमी भाग में वर्षा नहीं करती है।

वाल्डिविया से रेना तक मध्य चिली में भूमध्य सागरीय जलवायु है। यहां शीतकाल में पश्चिम की ओर से पछुआ हवायें आने लगती हैं और पानी बरसाती हैं। सेरेना से आगे

चिली-दर्शन

उत्तरी चिली में रेगिस्तान है। चिली के एटेकामा और टामारूगल रेगिस्तान अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान से खुश्की में किसी प्रकार कम नहीं हैं। वर्षा के अभाव से ही चिली के रेगिस्तानी जिलों में शोरे की अधिकता है। इक्वीक और एरीका नगरों में औसत से साल भर में आध इंच से भी कम पानी बरसता है। पर एण्डीज़ पर्वत पर इन्हीं अक्षांशों में ८००० फुट की ऊंचाई तक कुछ वर्षा हो जाती है बरफ भी गिर जाती है। सेरेना में पांच छः इंच, वालपरेज़ो में ३३ इंच और वाल्डिविया में १०७ इंच वर्षा हो जाती है। दक्षिणी भाग में किसी किसी स्थान में २०० इंच तक वर्षा हो जाती है। दक्षिणी भाग में हवायें भी बड़े वेग से चलती हैं। ३० मील प्रति घंटा उनकी साधारण चाल है। कभी कभी वे १२० मील प्रति घंटा की चाल से चलती है।

अक्षांश के अनुसार चिली देश का तापक्रम नीचा रहता है। ठंडी हम्बोल्ट धारा दक्षिणी ४० अक्षांश पर इस देश को छूती है। इस देश के समस्त तट पर उत्तर की ओर बहती है। यह इस भाग का तापक्रम बहुत नीचा रखती है। एरीका का ग्रीष्म कालीन तापक्रम ७५ अंश फारेन हाइट से अधिक नहीं होने पाता है। इक्वीक का औसत तापक्रम ६६ अंश और एण्टोफेगस्टा का ६५ अंश फारेन हाइट रहता है। वालपरेज़ो

का औसत तापक्रम ४८ अंश रहता है। वाल्डिविया का गरम से गरम (जनवरी) महीने का तापक्रम ६१ अंश और ठंडे जुलाई मास का तापक्रम ४५ अंश रहता है। पर वर्षा की प्रचुरता और बदली रहने के कारण यहां ठंड अधिक नहीं मालूम होती है। दक्षिणी भाग का तापक्रम ४० अंश फारेन हाइट रहता है जो नार्वे देश के ओस्लो शहर के समान है। धुर दक्षिणी सिरे पर फ़्यूगिया और पएटा एरीनाज़ का तापक्रम कभी कभी ९ और १२ अंश फारेन हाइट तक हो जाता है।

बनस्पति

चिली के उत्तरी रेगिस्तानी भाग में वनस्पति की कमी है। केवल मरुद्यानों या नखलिस्तानों में और नदियों के समीप कुछ वनस्पति मिलती है। इन्हीं में एक अल्गारोबा पेड़ है। इसके बहुत ही छोटे पीले फूल होते हैं। एक पेड़ टामारूगो होता है। इसी से टामारूगल रेगिस्तान नाम पड़ा। एण्डीज़ के पश्चिमी ढालों पर कुछ घास और रामवास की झाड़ियां मिलती हैं।

मध्यवर्ती चिली में बनस्पति अधिक अच्छी है। केवल उत्तरी भाग में ऐंठी हुई झाड़ियां या नाटे पेड़ हैं। इनमें कुछ

में सफेद दूध निकलता है। इनकी लकड़ी जलाने और कोयला बनाने के काम आती है। कुछ कांटेदार वृक्ष हैं। इस प्रदेश के कुछ भाग गाय, बैल पालने के काम आते हैं। यहीं कुछ पेड़ सदा हरे भरे रहते हैं। कुछ पेड़ों से तरह तरह के फल मिलते हैं। चिली का दक्षिणी भाग वर्षा की अधिकता से वन से ढका हुआ है। क्षेत्रफल के अनुपात से चिली में वन प्रदेश दूसरे देश से कहीं अधिक है। दक्षिणी सिरे से वाल्डिविया तक एण्डीज़ पर्वत का समस्त पश्चिमी ढाल विशाल वन से ढका है। इनके बीच बीच में केवल ऊंची चोटियां नंगी उठी हुई हैं।

हेसियण्डा (बड़े खेत)

हेसियण्डा या बड़े खेत का मालिक अपने खेत में ही रहता है। केवल कुछ महीनों के लिये वह अवकाश बिताने के लिये सेण्टियागो में आ जाता है। बड़े खेत में जागीरदार को सभी तरह का सुख रहता है। यहां उसकी सवारी के लिये घोड़े, टहलने के लिये बगीचे और शिकार करने के लिये जंगली पशु होते हैं। पर उसका पड़ोसी कई मील की दूरी पर रहता है। इसलिये अकेले रहते रहते वह व्याकुल हो जाता है।

जागीरदार को मजिस्ट्रेट का अधिकार होता है वह अपने मजदूरों को जेल भेज सकता है। इनक्विलीनों या मजदूरों को रहने के लिये घर मुफ्त मिलता है। कुछ जमीन भी बिना लगान के उन्हें दी जाती है। उन्हें थोड़ी सी जमीन शाक आदि उगाने के लिये बिना लगान के दी जाती है। वे अपने एक दो पशु भी मुफ्त चरा सकते हैं। इसके बदले में जब जागीरदार को आवश्यकता होती है तब उन्हें उसके बड़े खेत में काम करना पड़ता है। उन्हें दिन भर की मजदूरी आधा डालर (डेढ़ रुपया) मिलती है जब कि उसी ज़िले में दूसरे मजदूरों को सवा डालर या ४ रुपया मिलता है। मजदूरों के घर कच्ची मिट्टी के बने होते हैं और छप्पर से छाये होते हैं। इनके भीतर अंधेरा रहता है। इन छोटे घरों में मक्खियां और कीड़े मकोड़े भी बहुत होते हैं। इनक्वालीनों यहां भूमि के स्वामी नहीं बन सकते। कुछ मजदूर उत्तर की ओर शोरे की खानों में काम करने के लिये चले जाते हैं। अब चिली की सरकार दक्षिणी चिली में जर्मन और दूसरे विदेशियों को बसाने के बदले मूल निवासी इण्डियन लोगों को बस्तियां बनाने के लिये भूमि दे रही है। फिर भी देश में मजदूर श्रेणी के लोग जागीरदार नहीं हो सकते।

मध्य चिली में सब से अधिक उपजाऊ जमीन है यहां

घोड़ियों से दायँ चलाकर (माड़ कर) दाना अलग किया जाता है।

बिना सींचे पहाड़ी ढालों पर गरमी की ऋतु में ढोर चरने के लिये छोड़ दिये जाते हैं। चिली देश में अंगूर नाशपाती रसभरी आदि फल बहुत होते हैं। हर रेलवे स्टेशन पर स्त्रियों की लम्बी पंक्ति फलों की टोकरियां लिये दिखाई देती हैं। अंगूर से शराब भी बनाई जाती है। सिंचाई के भागों में प्रत्येक किसान (हेसियएडाडो) को सिंचाई का दाम देना पड़ता है। सिंचाई की प्रधान नहरें ऊंचे पहाड़ी ढालों से आरम्भ होती हैं। इनका भूरा मटीला पानी बड़ी तेजी से बहता है। इसी मटीले पानी से मीलों तक मध्यवर्ती घाटी में हरियाली छा जाती है। नहर का पानी शुद्ध नहीं होता है। इसमें एक प्रकार की गन्ध आती है। इनके पड़ोस में चरने वाली भेड़ों के पिस्सू हो जाते हैं।

दक्षिणी चिली में सरकारी भूमि प्रायः सौ या डेढ़ सौ रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से मोल ली जा सकती है। एक तिहाई दाम एकदम देना पड़ता है। शेष दस वर्ष में छोटी छोटी किश्तों में दिया जा सकता है। हदबन्दी का खर्च मोल लेने वाले को देना पड़ता है। उसे अपने खेत का घेर करवाना पड़ता है। इसमें बहुत खर्च पड़ता है।

वाल्डिविया और दक्षिणी चिली में बहुत सी जर्मन बस्तियां हैं। आरम्भ में चिली की सरकार को दक्षिणी भाग का बहुत कम पता था। अतः कुछ विदेशी लोगों ने इण्डियन सरदारों को सस्ती शराब पिला कर उन्हें अपना मित्र बना लिया। फिर उन्हें नाम मात्र का मूल्य देकर उनसे ज़मीन ले ली। १८५० ई० में वाल्डिविया में प्रथम जर्मन उपनिवेश बना। इन लोगों ने जंगल काट कर बगीचे लगाये, घर बनाये और दूसरे कारबार आरम्भ किये। पहले केथलिक पादरी इन प्राटेस्टेण्ट लोगों के विरुद्ध थे।

शोरे की खानें

तारापका का विशाल रेगिस्तान चिली के उत्तरी भाग में एक विशाल रेगिस्तान बनाता है। इस रेगिस्तान ने प्राचीन समय में चिली की स्वाधीनता की रक्षा की और उत्तर से आने वाले आक्रमणकारियों को रोका। आजकल इसी भाग में चिली देश की प्रधान सम्पत्ति है। इससे देश को बड़ा लाभ होता है। यह एक विकराल रेगिस्तान है। इसके मार्ग में स्थान स्थान पर उन बोझा ढोने वाले पशुओं की हड्डियां और सूखी खालें बिखरी हुई मिलती हैं जो यहां भूख, प्यास और थकावट से

मर गये। लाशों को खाने वाले गिद्धों को छोड़कर यहां और कोई कीड़ा मकोड़ा या रेंगने वाला जानवर नहीं है। तट के पास पहाड़ों में २००० फुट की ऊंचाई पर जहां कुछ बादल आ जाते हैं वहां दरारों में रामबांस और दूसरी कांटेदार झाड़ियां हैं। ढीली बालू में कहीं कहीं छोटी पीली घास मिलती है। खुश्क जलवायु में ही शोरे के ढेर रह सकते हैं। थोड़ी सी वर्षा में भी शोरा घुल जाता है। पर यहां लगातार कई वर्षों तक पानी नहीं बरसता है। शोरे के ढेर १९ और २६ दक्षिणी अक्षांशों के बीच में ७५० किलोमीटर की लम्बाई में और ३ किलो मीटर की चौड़ाई में फैले हुये हैं। यह तटीय उजाड़ कार्डीलेरा पर्वत के पूर्वी ढाल पर स्थित हैं। यह टामा रूगल पम्पा के पश्चिम में पाये जाते हैं। अति प्राचीन समय में चिली का यह भाग समुद्र के नीचे डूबा हुआ था। धीरे धीरे यहां की जमीन ऊपर ऊंची उठी। फिर भी बहुत से अनूप, खारी झीलें और दलदल किनारे शेष रह गये। यहाँ उगने वाले पोदे सड़कर और सूख कर मिट्टी में मिल गये। आगे चलकर यही शोरे के ढेर लग गये।

कहते हैं १८२६ ई० में यहां पहली बार शोरे का कारबार आरम्भ हुआ। अंग्रेजों ने इस कारबार से पूरा लाभ उठाया। उन्होंने यहां ३७ करोड़ रुपये लगा दिये। यहां १०० से ऊपर

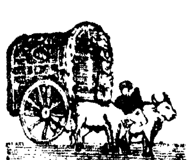
शोरे की कम्पिनियां हैं। प्रायः १२०० मजदूर काम करते हैं। पिसागुआ, जूनिन, कालेटा ब्यूना, इक्वीन, पैटीलोस, टोकोविला, मेजीलोन्स, एण्टो फेगस्टा, पापोसो और टलटल नगरों की समृद्धि शोरे के कारबार पर ही निर्भर है।

शोरे का कच्चा पदार्थ १ फुट से लेकर १० फुट की गहराई पर मिलता है। इसे निकालने के लिये विचित्र यन्त्रों से काम लिया जाता है। लड़का छेद करता है। फिर इस छेद में डाइनेमाइट लगा दिया जाता है। जब यह फूटता है। तब कच्चे शोरे के टुकड़े छांट कर खच्चर गाड़ियों में भर लिये जाते हैं। यह गाड़ियां इसे कारखाने में लाती हैं। कारखाने में पहले कच्चा पदार्थ पीसा जाता है। फिर यह पानी में घोला जाता है। अन्त में बड़े बड़े कड़ाहों में शोरा इकट्ठा कर लिया जाता है। फिर यह सूखा शोरा बोरों में भर कर और रेल गाड़ियों पर लाद कर बन्दरगाहों में पहुँचा दिया जाता है। शोरे की कम्पिनियों को इतना लाभ हुआ है कि इन्होंने अपनी रेलवे लाइन और बन्दरगाह बना लिये हैं। कुलियों के घर और अंग्रेज अफसरों के बंगले आदि तो इन्होंने बनाये ही हैं।

बड़े नगरों में बिजली, पानी के नल, टैम्बे आदि का निर्माण इसी शोरे के लाभ से हुआ है। पहले यहां बन्दरगाहों में पीने का मीठा पानी जहाजों के आने पर मिलता था। अब

यह पानी एण्डीज़ पर्वत से आने लगा है। आस्ट्रेलिया के जहाज़ न्यू साउथ वेल्स का कोयला यहां लाते हैं और वे शोरा लादकर इंगलैंड या जर्मनी पहुँचाते हैं। भारतवर्ष से आनेवाले जहाज़ जूट के बोरे लाद कर लाते हैं। प्रतिवर्ष पन्द्रह बीस करोड़ रुपये का शोरा यहां से बाहर जाता है। यह इंगलैंड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, भारतवर्ष, मिस्र और संयुक्त राष्ट्र अमरीका को जाता है। शोरे की खाद कई फसलों के लिये बड़ी उपयोगी होती है। चुंगी आदि से यहां की सरकार को प्रायः १ करोड़ रुपये की वार्षिक आय होती है।

टलटल में सोने चांदी और तांबे की खानें हैं। लोटा, लीबू आदि स्थानों में कोयले की खान हैं। पर चिली कोई कारबारी देश नहीं है। बिजली तयार करने में कुछ उन्नति हुई है। चमड़े का सामान भी बनाया जाता है। वैसे यहां छोटे मोटे कारबार ही है। कला कौशल में यह बहुत पिछड़ा हुआ है।



संक्षिप्त इतिहास

चिली जैसे विविध प्राकृतिक प्रदेश वाले देश में यह स्वाभाविक था कि इसके भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न जातियों का निवास हो। स्पेन वालों के आने से पूर्व यहां दक्षिणी अमरीका में रहने वाली प्रायः प्रत्येक जाति का नमूना मिलता था। धुर दक्षिणी भाग में फ्यूगिया के पश्चिमी तट पर अत्यन्त ठंडे बर्फीले प्रदेश में यागन लोगों का निवास रहा है। यह लोग सभ्यता में बहुत पिछड़े हुये हैं। कुत्ते को छोड़ कर और किसी पालतू पशु का पालना उन्होंने नहीं सीखा है। यह लोग समुद्र-तट के समीप ही रहते हैं। वहीं यह मछलियां, केकड़ा, और जंगली चिड़ियों के अंडे एकत्रित करके निर्वाह करते हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि यह एस्किमो लोगों के सम्बन्धी हैं और आरम्भ में वे बेहरिंग प्रणाली के पड़ोस में रहते थे। फिर जैसे जैसे अधिक योग्य और शक्तिशाली जातियां इन्हें ढकेलती गईं वैसे वैसे यह पीछे हटते गये और अन्त में दक्षिणी अमरीका के धुर दक्षिणी, ठंडे और वीरान प्रदेश में इन्हों ने शरण ली। यह भाग दूसरी जातियों के लिये निकम्मा था। इसलिये यागन लोग सदियों से यहां बने रहे। हार्न अन्तरीप के ठंडे प्रदेश में यह प्रायः नंगे रहते हैं। उनकी छोटी नावें वृक्षों के छिलकों से बनाई जाती हैं। तूफानी समुद्र में जहां ज़रा सा भी पानी शान्त हुआ तभी पूरा परिवार नाव पर

चढ़ कर शिकार की खोज में चल देता है। पुरुष धनुष बाण लेकर शिकार की खोज में सतर्क बैठते हैं। दो स्त्रियां डांड़ से नाव चलाती हैं। तट पर इनका कुत्ता छिपे हुये पशु या पक्षी की खोज में निकलता है। वह सूंघ सूंघ कर शिकार का पता लगा लेता है। अनुकूल स्थान पर पहुँचने पर वे कुछ लकड़ियों को इकट्ठा कर के आश्रय स्थान बनाते हैं। इन्हीं से वे आग जलाते हैं। इसे वे बहुत सुरक्षित रखते हैं। स्थान स्थान पर जलती हुई आग देख कर ही स्पेन वालों ने इनके द्वीप का नाम टेरा डेल फ्यूगो (अग्नि प्रदेश) रक्खा। यह लोग किसी देवी देवता या धर्म में विश्वास नहीं रखते हैं। नाव चलाने में चतुर होने पर भी यह लोग तैरना बहुत कम जानते हैं। नये स्थान में पहुँचने पर इन्हें सब से बड़ी चिन्ता भोजन की पड़ती है। स्त्रियां बर्फीले पानी में तैर कर समुद्री घास इकट्ठी कर लेती हैं। मछली, केकड़ा, अंडे और दूसरे खाद्य पदार्थ भी इकट्ठे कर लिये जाते हैं। जितने दिन यह लोग एक स्थान पर रहते हैं। उसी के अनुपात से इनमें फेंके हुये मैल का ढेर ऊंचा हो जाता है। इनकी सूरत साधारण मूल निवासी अमरीकन इण्डियन लोगों से कुछ गिरी हुई होती है। इनका शरीर गठीला और बाहें बलवान होती हैं। इनका मुह चौड़ा और ओंठ और नथुने मोटे होते हैं। इनके बाल मोटे और काले होते हैं। कहते हैं

कि यदि यह कपड़े और खास कर पाजामा पहनें तो शीघ्र मर जाते हैं। इस लिये यह प्रायः नंगे रहते हैं। शिकारी कुत्तों के पालने में यह बड़े दक्ष होते हैं। अकाल पड़ने पर वे बुड्ढी स्त्रियों का चाहें गला घोंट दें पर शिकारी कुत्तों को जीवित रक्खेंगे। ऐसी दशा में दो सौ वर्षों में इनकी संख्या २५०० से घटते घटते केवल २०० रह गई है। आज कल यह लोग टेरा डेल फ्यूगो के केवल पश्चिमी किनारे पर मिलते हैं।

मेगेलन प्रणाली के उत्तर में पश्चिमी तट के द्वीपों और प्रधान स्थल में अलाकालूफ लोग रहते हैं। यह लोग मछली पकड़ते हैं और शिकार करते हैं इनकी संख्या प्रायः ८०० है। यह अधिक सभ्य हैं। इनकी नावों पर बीस तीस मनुष्य बैठ सकते हैं। इनकी नावें लट्ठों या तख्तों की बनी होती हैं। लट्ठों को यह खोखला कर लेते हैं। तख्तों को यह एक लता से बांध लेते हैं। यह छोटे घरों में रहते हैं। इन्हें यह लकड़ी के लट्ठों से बनाते हैं। और खाल या छाता से छा लेते हैं। यह लोग उदास रहते हैं। जिनके जहाज टूट जाते हैं उनकी यह सहायता करते हैं।

एक बार एडमिरल सर जान बाइरन को स्त्रियों ने भूखों मरने से बचाया था। यह स्त्रियां ठंड से सिकुड़ रही थीं। इनके बालों से बर्फीला पानी चू रहा था। ठंडे पानी में तैर कर यह एडमिरल को मछलियां देने आई थीं। यह समुद्र में डुबकी

लगा कर समुद्री अंडे इकट्ठे करती थीं। यह बहुत देर तक पानी के भीतर सांस रोक कर ठहर जाती थीं। अलाकालूफ लोग पांच फुट २ इंच लम्बे होते हैं। इनके गाल चौड़े और ओंठ मुड़े हुये होते हैं। इनका रंग कुछ गोरा होता है।

चोलो इण्डियन और चिलो इण्डियन अधिक उत्तर की ओर रहते हैं। इन पर स्पेन के मिशनारियों का प्रभाव पड़ा। इनमें अधिकतर वर्ण संकर हैं।

ओना इण्डियन तट से कुछ दूर घास वाले प्रदेश में रहते हैं और ग्वानाको का शिकार करते हैं। यह लोग कई रंग की मिट्टी से अपना शरीर रंग लेते हैं। इससे शिकार का पशु इन के पास आने पर बहुत चौंकता नहीं है। इनके बच्चे भी झाड़ियों के पीछे घंटों चुपचाप ठहरे रह जाते हैं। पुरुष तीर चलाने में बड़े निपुण होते हैं। वे १५० गज की दूरी से ठीक निशाने पर बाण मारते हैं। वे प्रायः एक दूसरे पर बाण चला कर खेल खेलते हैं। पर दूसरा पुरुष इतना फुर्तीला होता है कि वह झट इधर या उधर उछल कर बच जाता है। यह देवी देवताओं को मानते हैं। जब ओना लड़का १५ वर्ष का होता है तब एक विचित्र संस्कार होता है। उसकी जांघ पर लकड़ी ठोंक दी जाती है। इस लकड़ी में आग लगा दी जाती है। जलती हुई लकड़ी की लपट उसके भुनते हुये मांस से बुझ जाती है। पर

वह लड़का हँसता और बात करता रहता है। इसके बाद वह लड़का घर से बाहर निकाल दिया जाता है। फिर दो वर्ष बीतने पर ही घर लौटने पाता है। यदि वह व्याह करना चाहता है तो वह अपनी अभीष्ट लड़की को अपना धनुष देता है। यदि वह लड़की अपने हाथ से ही धनुष लौटा देती है तो इसका यह अर्थ होता है कि उसे व्याह करना स्वीकार है। इसके पश्चात युवा उस लड़की को अपने घर ले जाता है। यदि लड़की व्याह नहीं करना चाहती है तो वह किसी दूसरे के हाथ से धनुष भिजवा देती है। पर ऐसा करने से युवा प्रायः लड़की की टांग में तीर मार देता है। जब पहली बार इस भाग में भेड़ें लाई गईं तब वे उन्हें जंगली पशु समझ कर मार कर खा जाने लगे। इस पर इनसे और योरुपीय लोगों से झगड़ा होने लगा। अब झगड़ा नहीं होता है। ओना लोगों की संख्या केवल ६०० शेष रही है। नई बातों को सीखने में यह लोग बड़े कुशल होते हैं। जब से गोरे लोग इनके समीप आये तब से यह लोग अपने बाणों की नोक में शीशे का टुकड़ा लगाने लगे हैं। वे लोमड़ियों की खालों को चिकना करने में ग्वानाको की हड्डी और पत्थर के टुकड़ों का प्रयोग करते हैं। ग्वानाको का सिर और कान खच्चर की तरह और शरीर ऊंट की तरह होते हैं। पर वह ऊँचा बहुत कम होता है।

चिलो—दर्शन

चिली देश के आराकानियन और दूसरे रेड इण्डियन कबीले कुछ खेती भी कर लेते हैं। यह लोग स्पेन वासियों से हिल मिल गये। युद्ध पर जाने के पूर्व यह लोग ग्वानाको की बलि चढ़ाते थे। समस्त सेना को इसके मांस का प्रसाद खाना पड़ता था, जिससे सब सिपाहियों का एक हृदय और एक इच्छा हो। फिर वे पृथिवी को कँपाने के लिये ओऊ ओऊ चिल्लाते थे और उछल उछल कर नाचते थे। कभी कभी वे युद्ध में विषैले बाणों का प्रयोग करते थे। इनके सिरों को वे विषैली वनस्पति के रस में डुबाते थे। अधिक आगे बिओ बिओ और माली नदी के बीच में अधिक जनसंख्या थी। यहां के लोग आधे सभ्य थे। यहां लोग मक्का और आलू की खेती करते। कहते हैं इन्का लोगों ने इन्हें जीत कर सभ्य बना लिया था। १४७५ ई० में एक इन्का सरदार अपनी एक सेना यहां ले आया। उसने चिली का उत्तरी भाग माली नदी जीत कर इन्का साम्राज्य में मिला लिया। उन्होंने जीते हुये लोगों के साथ अच्छा वर्ताव किया और खेतों का सींचना सिखलाया।

जिस वर्ष १५२६ ई० में बाबर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की ठीक उसी वर्ष स्पेन निवासी इस शान्ति प्रिय देश पर चढ़ आये। वे इन्का शाही मार्ग से जुजुई और साल्टा पहुँचे। आक्रमण कारियों के पास ५०० स्पैनिश और १५,००० इण्डियन

सिपाही थी। आरम्भ में इनका कोई विरोध न हुआ। पर जब शीत काल में इन्होंने एण्डोज़ पर्वत को पार करने का प्रयत्न किया तब इन पर घोर विपत्ति आई। इनके निर्जन मार्ग में भोजन और ईंधन समाप्त हो गया। बहुत से घोड़े ठंड खा कर मर गये। कुछ सिपाही पहाड़ी बीमारी से मर गये। कुछ की अंगुलियां ठंड से बेकाम हो गईं। कुछ सिपाही बर्फ़ पर लगातार धूप में देखते देखते अंधे हो गये। पहले इनके सामने सर्वनाश दिखाई दिया। फिर इनका नेता कुछ मज़बूत सिपाहियों को लेकर कोपियापो की हरी घाटी में पहुँच गया। यहां से भूखों मरने वाले सिपाहियों को खाद्य सामग्री पहुँचाई गई। फिर भी एण्डीज़ के दर्रे को पार करने में १५६ स्पैनिश सिपाही और १०,००० इण्डियन सिपाही नष्ट हो गये। स्पैनिश नेता ने कोपियापो इण्डियन लोगों से १५००० सोने की मुहरें लेकर अपने अनुयाइयों को बांट दी। यहां से वह चिली की सघन और उपजाऊ घाटी में पहुँचा। यहां घमासान लड़ाई आधी रात तक चली। दूसरे दिन फिर इण्डियन लोगों ने विरोध किया। इस लिये स्पेन वासी कुज़को की ओर लौट आये।

पेड्रो वाल्डिविया

वाल्डिविया पिज़ारो का एक वीर सैनिक था। युद्ध के अन्त में उसे एक बड़ी जागीर मिली थी। इस जागीर में काम करने के लिये उसे इण्डियन मजदूर मिले थे। इण्डियन मजदूरों से स्पेन वासी इतना कड़ा काम लेते थे कि वे प्रायः काम करते करते मर जाते थे। वाल्डिविया को इस बड़ी जागीर से सन्तोष न था। वह एक साम्राज्य चाहता था। उसने पहले अपने आपको चिली का लेफ्टनेण्ट गवर्नर बनाया। पीरू का पिजारो गवर्नर था। वाल्डिविया नया राज्य जीतने के लिये स्वतन्त्र था। एक स्पेनिश व्यापारी से आवश्यक धन लेकर वाल्डिविया ने एक छोटी सेना एकत्रित की। इसी धन से उसने घोड़े, हथियार, अन्न, सुअर आदि मोल लिये।

१५३६ ई० में उसने १५६ स्पेनिश और १००० इण्डियन सिपाहियों के साथ प्रस्थान किया। उसने उत्तरी रेगिस्तान को पार किया और अपने विरोधियों को दबाया। अन्त में वह कोपियापो की उपजाऊ घाटी में पहुँच गया। अधिक आगे बढ़ने से रोकने के लिये मूल निवासी चिथड़े पहन कर वाल्डि-विया के सामने उपस्थित हुये। इस गरीबी के दृश्य से उसके सिपाहियों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि आधे सिपाही छोड़कर चले गये। पर वाल्डिविया शेष सेना को लेकर आगे बढ़ता ही

गया। आगे उसे और भी अधिक उपजाऊ और अधिक घना बसा हुआ भाग मिला।

मापाचो की हरी भरी घाटी में उसने राजधानी के लिये स्थिति निश्चित की। यहीं आगे चलकर चिली देश की राजधानी सेन्टियागो नगर बसाया गया। सेण्टा लूशिया की पहाड़ी ने सेण्टियागो को एक प्रायः अजेय स्थान बना दिया। वाल्डिविया के समय में सेण्टियागो के छोटे छोटे झोपड़े एक प्रकार के द्वीप पर बने थे। इस द्वीप को मोपाचो नदी की दो शाखाओं ने बनाया था। वाल्डिविया ने अपने घुड़ सवार चारों दिशाओं में भेजे। इण्डियन सरकार एकदम चुपचाप थी। उसने मल्गा मल्गा की सोने की खान से सोना निकालने के लिये १२०० पुरुष और ५०० स्त्रियों को लगाया। रिओ एकान्केगुआ के मुहाने पर उसने एक नगर बसाया। इन दिनों इधर इमारती लकड़ी बहुत थी। इण्डियन लोगों ने फसल काट लेने पर विद्रोह का झंडा उठाया। वाल्डिविया ने २५ सिपाही और १० घोड़े लेकर उनपर छापा मारा। सेण्टियागो राजधानी की रक्षा के लिये ५० सिपाही छोड़ दिये गये थे। यहीं इण्डियन लोगों के सरदार कैद थे। आठ दस हजार इण्डियन लोगों ने एकत्रित होकर सेण्टियागो पर चढ़ाई की। नगर में आग लगादी गई।

स्पेनिश सिपाही भाग कर किले के पास पहुँचे। वाल्डिविया की स्त्री ने बन्दी इण्डियन सरदारों के सिर काट डाले और कटे हुये सिरों का प्रदर्शन आक्रमणकारी इण्डियन लोगों के सामने किया। लड़ाई सारे दिन चली। सन्ध्या के समय घुड़सवार स्पैनिश सिपाहियों ने अपार मार काट की। रात्रि में कुछ शान्ति रही। समस्त जनता गेहूँ बोने और किले को फिर से बनाने के कार्य में लगा दी गई। फिर भी विद्रोह २ वर्ष तक चला। घिरे हुये स्पैनिश सिपाहियों को चूहे खाकर दिन बिताने पड़े। पीरू से सहायता मंगाई गई। आवश्यक सामान जहाज पर लादकर वालपरेज़ो बन्दरगाह को भेजा गया। १५४४ और १५४६ ई० के बीच में उत्तरी चिली पर अधिकार कर लिया गया। इण्डियन लोगों ने आशा छोड़ दी। वे स्पेनवासियों के गुलाम बन गये और उनकी जागीरों में काम करने लगे। सब सिपाहियों के लिये काफ़ी जागीरें न थीं। इसलिये नई जागीरों को प्राप्त करने के लिये और नये इण्डियन लोगों को गुलाम बनाने के लिये नये प्रदेश जीतने की योजना की गई। उत्तर की ओर वाल्डिविया ने सेरेना नगर बसाया। यहां से वह दक्षिण की ओर एक सेना लेकर बढ़ा। एक जहाज किनारे किनारे समुद्री मार्ग से बढ़ा। इस विजय मार्ग में आराकानियन इण्डियन ऐसी भीषणता से लड़े कि

स्पैनिश सिपाही दंग रह गये। वाल्डिविया सेण्टियागो को लौट आया। पीरू से सहायता प्राप्त करके १५५० ई० में वाल्डिविया ने फिर विजय के लिये प्रस्थान किया। आराकानियन इण्डियन लोगों के पास बन्दूकें और घोड़े न थे। फिर भी वे कई दिन तक लड़ते रहे। एक रात्रि को २०००० आराकानियन लोगों ने स्पैनिश पड़ाव पर छापा मारा। उन्होंने डंडे मार कर कई घोड़ों को बेकार कर दिया। प्रायः प्रत्येक स्पैनिश सिपाही घायल हुआ। फिर भी नये हथियारों के सामने इण्डियन न टिक सके। वाल्डिविया ने अपने नाम की स्मृति में इसी नदी के किनारे १५५३ में वाल्डिविया किला और शहर बसाया। अराको, टूकामेल, प्यूरेन, कन्सेप्शन और इम्पीरियल में भी किले बनाये गये।

इण्डियन फिरकों ने देखा, कि अलग अलग रहने से सब नष्ट हो जायंगे। अतः उनके प्रतिनिधियों ने एक स्थान पर सभा की। उन्होंने मिलकर १८ वर्ष के एक नौ जवान को अपना सेनापति चुना। यह वाल्डिविया का सईस रह चुका था और स्पैनिश चालों से परिचित था। उसने अपनी सेना को कई टुकड़ियों में बांट दिया। प्रत्येक टुकड़ी को उसने आदेश दिया कि हारने की दशा में उन सपाट कन्दराओं में जाकर शरण लो जहां स्पैनिश सिपाहियों के घोड़े न पहुँच सकें। उसने एक टोली

अपने अधीन सुरक्षित रक्खी। शेष स्पेनिश सिपाहियों के मार्ग में छिपा दी गई। उसने छिपे हुये सैनिकों को आदेश दिया कि स्पेन के अग्रिम टोली के सिपाही मार डाले जावें। टूका वेल किला जला दिया गया। वाल्डिविया अपनी सेना लेकर इस ओर बढ़ा। जब वह बहुत आगे पहुँच गया और उसके अग्रिम बाल चरों का कोई समाचार नहीं मिला। तब उसे बड़ा सन्देह हुआ। पर अब लौट भी नहीं सकता था। पहले एक टोली से लड़ाई हुई। थके स्पेनिश जब इकट्ठे हुये तब फिर दूसरी टोलियों से युद्ध हुआ। अन्त में प्रत्येक स्पैनिश मार डाला गया। वाल्डिविया भी पकड़ लिया गया और मार डाला गया। वाल्डिविवा की मृत्यु के बाद विजयी मूल निवासियों का विद्रोह इतना बढ़ा कि स्पेन वालों के लिये छोटे छोटे स्थानों को अधिकार में रखना कठिन हो गया। कन्सेपशन, इम्पीरियल और वाल्डिविया नगरों पर उनका अधिकार किसी प्रकार बना रहा। वाल्डिविया एक साथी सर्वोत्तम १८० स्पैनिश सिपाही और कुछ तोपें लेकर दक्षिण की ओर बढ़ा। उसका मार्ग तंग और चपटा था। एक और यह समुद्र-तट और दूसरी ओर कार्डि लेरा पर्वत से घिरा था। मेरी ग्वेनू के पास दोनों, पहाड़ियां समुद्र तक पहुँचा जाती हैं। इनके बीच चिवीलिंगो नदी की छोटी घाटी है। समुद्र के पास यह घाटी कुछ चौड़ी हो

जाती है। पड़ोस की पहाड़ियां जंगलो से ढकी हैं। इस स्थान तक पहुँचने में स्पेन वालों को कोई बाधा न हुई। मूल निवासी अपनी उगी हुई फसलों और घरों को छोड़कर चले गये थे। चिवी लिंगी की घाटी में जहां स्पेनवालों ने पड़ाव डाला वहां उन्होंने फसलों को नष्ट कर दिया। रात में भी मूल निवासियों का कोई चिन्ह दिखाई न दिया। पर पांच छः हजार इण्डियन लोगों ने पेड़ों और झाड़ियों को काट कर स्पेन वालों के लौटने का मार्ग रोक दिया। दूसरे दिन स्पेनिश सिपाही जब पहाड़ी टीलों पर चढ़े तो भी उन्हें कोई संकट दिखाई नहीं दिया। फिर एक कुत्ता भौंका और चारों ओर से इण्डियन लोगों के झुंड प्रगट होने लगे। कुछ देर तक स्पेन की तोपों ने उनका संहार किया। पर नये नये झुंड आते रहे। कुछ समय तक स्पेनिश घुड़ सवारों ने खूब काम किया। पर इण्डियन लोग गदा और धनुष वाणों के अतिरिक्त इस बार लताओं के फंदे भी अपने साथ लाये थे। घुड़सवारों को वे इनमें फंसाकर घोड़ों की पीठ से खींच लेते थे। अन्त में स्पेन वालों की तोपें छिन गईं। उनसे भागते न बना। कन्सेपशन नगर खाली कर दिया गया। स्त्री बच्चे वालपरेजो को भेज दिये गये। इण्डियन लोगों ने कन्सेपशन को एक दम नष्ट कर दिया। पीरू देश से भी इन्हें कोई सैनिक सहायता न मिली। पर स्पेन के सौभाग्य

से इण्डियन लोग विजय से लाभ न उठा सके। फ़सलों के नष्ट हो जाने से वे भूखों मर रहे थे। उनमें एक ऐसी महामारी फैली कि हज़ारों इण्डियन मर गये। इसी समय स्पेन का एक नया गवर्नर इण्डियन लोगों का सर्वनाश करता हुआ इधर आया। उसने कन्सेपशन को फिर से बसाया। पर इधर इण्डियन लोगों के नेता लाराटो ने ऐसा अचानक छापा मारा कि स्पैनिश लोगों ने भाग कर सेंटियागो में शरण ली। दूसरे वर्ष रिओ माली (नदी) को पार करके लारोटो ने सेंटियागो पर ही धावा बोला। माटाक्विटो की घाटी में पेटेरोआ स्थान पर उसने पड़ाव डाला। उसने अपने अगले भाग में ऐसे गढ़े खुदवा दिये कि स्पैनिश घुड़ सवार उसकी सेना पर आक्रमण नहीं कर सकते थे। पर स्पेन वालों ने चक्कर काट कर पीछे से छापा मारा। इंडियन सिपाही सो रहे थे। कुछ नशे में थे। सभी ने अपने हथियार अलग रख दिये थे। फल यह हुआ कि स्पेन की जीत हुई। इंडियन लोगों का वीर नेता लाराटो भी मारा गया। उसकी मृत्यु से आराकानियन इंडियन लोगों की स्वाधीनता का अन्त हो गया।

मेंडोज़ा नया गवर्नर नियुत हुआ। वह कट्टर केथलिक था। उसने एक लड़ाई में इंडियन सरदारों को पकड़ कर फांसी लगवा दी और भी कई लड़ाइयों में वह विजयी हुआ।

१५५७ और १५६१ के बीच में टुकूमान, कुओं और मेंडोज़ा नगर बसाये गये। १५६० में मेंडोज़ा स्पेन के राजा की आज्ञा से अलग कर दिया। उस पर लूट मार आदि के २१५ जुर्म लगाये गये। इसके पश्चात् कुछ लड़ाइयों में फिर इंडियन विजयी हुये। पर विजय के बाद इंडियन लोग हंसी खुशी में मस्त हो जाते थे और स्पेनिश सैनिकों का पीछा करके उससे पूरा लाभ नहीं उठाते थे। इसी समय सरफ्रेंसिस ड्रेक नामी लुटेरे अंग्रेज़ ने इस ओर स्पेन के जहाज़ों को लूटना आरम्भ किया। १५८० ई० में वाल्डिविया का अन्तिम साथी मर गया। इंडियन लोग अपनी स्वाधीनता के लिए भीषणता से लड़ते ही रहे।

१७१२ ई० में ४० फ्रांसीसी जहाज़ चिली से व्यापार करने आये। कुछ अंग्रेज़ समुद्री डाकू भी आये। इसलिये बन्दरगाहों पर किले बन्दी करनी पड़ी।

चिली देश स्पेन के उपनिवेशों से कई बातों में भिन्न था। यह दूसरे उपनिवेशों की अपेक्षा अलग पड़ता था।

सोना चाँदी की कमी से नवान्तुक स्पेनवासी खेती करने लगे। आराकानियन इंडियन लोगों के लगातार युद्ध ने उन्हें कठोर बना दिया। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में चिली देश की

जनसंख्या १ लाख थी। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में यहां की जनसंख्या बढ़कर ५ (पांच) लाख हो गई। इनमें ३ लाख वर्णसंकर मेस्टिज़ो थे। डेढ़ लाख क्रिओलो या वे योरुपीय थे जो यहां के निवासी हो गये थे। २०००० हाल में आये हुये स्पेन वासी थे। इन्हीं में उत्तरी स्पेन के बास्क लोग व्यापार कार्य में लगे हुये थे। कुछ हब्शी और युक्त रेड इंडियन थे। इन लोगों में कुछ एकता बढ़ रही थी। पर बड़ी बड़ी जागीरें कुछ स्पैनिश वंशों को ही दी जाती थी। १८०८ ई० में जब नेपोलियन ने स्पेन पर चढ़ाई की तब स्पेन के उपनिवेश अनाथ हो गये। १८१० ई० में सेंटियागो की एक सर्व साधारण सभा में यहां के लोगों ने स्वराज्य सम्बन्धी प्रस्ताव पास किया। देश का प्रबन्ध करने के लिये ७ सदस्यों की एक जण्टा पंचायत नियत की गई। पर इससे लोगों में फूट फैल गई। कुछ लोग स्पेन के राजा के राजभक्त थे और उस सम्बन्ध को तोड़ना नहीं चाहते थे। कुछ स्वाधीनता प्रेमी थे। इन दोनों दलों का गृह युद्ध ढाई वर्ष तक चला। विलियम ब्राउन नाम के एक आयरिश नेता ने ४ जहाज लेकर ब्यूनाज़ायर्स से प्रशान्त महासागर तट पर चढ़ाई की। इससे चिली देश में आतंक छा गया। आगे चलकर स्पेन फ्रांस के चंगुल से मुक्त हो गया। उसने फिर उपनिवेशों की ओर दृष्टि फेरी। रायलिस्ट या राजभक्त दल चिली में प्रबल

हो गया। रांकाग्वा की लड़ाई में देश भक्त आपस की फूट से बुरी तरह हारे। विजेताओं ने बड़ी निर्दयता का व्यवहार किया। घायल सिपाही जीवित जला दिये गये। अफसर गोली से उड़ा दिये गये। देश भक्तों का नेता ओहिगिन्स शेष सिपाहियों को लेकर एण्डीज पर्वत के उस पार चला गया। रांकाग्वा की विजय के बाद १८१७ ई० से राजभक्त दल चिली पर शासन करने लगा। देश भक्त लोग सताये जाने लगे। जिन किसानों के हाथ में हथियार होते थे वे गोली से उड़ा दिये जाते थे। माले और सेंटियागो के बीच में कोई घोड़े या खच्चर पर सवार नहीं हो सकता था। घोर अत्याचार ने देश को विद्रोह के लिये तयार कर दिया। इस विद्रोह का आरम्भ कर्नल सैन मार्टिन ने किया। १७७८ ई० में रिओ यूरूग्वे में पैदा हुआ था। वह लम्बा और सुडौल था। एंडीज़ को पार करने के कारण वह एंडीज़ का हनीबाल कहलाता है। उसने स्पेन में युद्ध शिक्षा ली थी। उसने एंडीज़ को पार करने के लिये २ वर्ष तयारी की। ओहिगिन्स उसका विश्वास पात्र साथी हो गया। मेंडोज़ा की महिलायें उसके सैनिकों के लिये वर्दी (कपड़े) तयार करती थीं। वे ही उसके झंडों को सजाती थीं। मुक्त हब्शी भी उसकी सेना में भरती हो गये। एंडीज़ को पार करने के लिये उसने ७००० खच्चर इकट्ठे किये। तोपों को ढोने के

लिये खास तौर की छोटी गाड़ियां तयार की गईं। इनमें ऊन और चमड़ा लगा था। मक्का, बिस्किट, पनीर भोजन के लिये इकट्ठा किया गया। पहाड़ी बीमारी से बचने के लिए लहसुन और शराब इकट्ठी की गई। छः स्थानों पर एंडीज़ को पार करने का निश्चय किया गया। कोपियापो, कोकिम्बो, लास पाटोस, लास एंडीज़; लास पिंकिन्स और प्लान-चोन दर्रों से देश भक्त सेना चढ़ाई करने लगी। इन दर्रों के राजभक्त पहरेदारों से कुछ भी करते न बना। उन्होंने केवल अपने अफसरों को सूचना दी कि अज्ञात संख्या में दर्रों से सेनायें आ रही हैं। १८१७ ई० की १३ फरवरी को प्रातः काल एक देश भक्त सेना कोपियापो नगर की सड़कों पर पहुँच गई। एक देश भक्त सेना अज़्फ्रें दर्रे और रिओलिमारी के मार्ग से कोकिम्बो में पहुँची। अस्पलाटा दर्रे और गांव के मार्ग से आनेवाली प्रधान सेना ने लास एंडीज़ नगर पर अधिकार कर लिया। चाकाबूको की पहाड़ी पर देश भक्तों ने शाही सेना को बुरी तरह हराया। १६०० सिपाहियों में ५०० मारे गये। ६०० कैद कर लिये गये। इस समाचार को पाते ही शाही दल के लोग सेंटियागों को खाली करके वालपरेज़ो चले गये। सभी स्थानों में गड़बड़ी मच गई।

मैपो के युद्ध में १५०० शाही सैनिक मार डाले गये ४६०० कैद कर लिये गये। शेष इधर उधर भाग गये।

ओहिग्गिन्स ने एक जल सेना तयार की। उसका कहना था कि स्पेन के राजा ने पांच जहाजों की सहायता से दक्षिणी अमरीका को जीता। हम लोग पांच ही जहाजों से स्पेन वासियों को यहां से भगा देंगे। देश भक्तों की जल सेना ने वाल्डिविया और दूसरे स्थानों को जीत लिया। आगे चल कर ओहिग्गिन्स ने अपना त्याग पत्र दिया और चिली देश में फिर गड़बड़ी मच गई। १८२३ ई० में नया विधान स्थगित कर दिया गया। १८३१ से १८६१ ई० तक यहां निरंकुश प्रजातन्त्र रहा। कुछ आर्थिक उन्नति हुई। विद्या प्रचार भी बढ़ा। १८६१ से १८९१ तक शासन की बागडोर उदार दल के हाथ में रही। पर मूल निवासियों का विद्रोह बड़ी कठोरता से दबाया गया।

१८७९ और १८८० ई० में पीरू से युद्ध आरम्भ हुआ। बोलिविया के राजकर्मचारियों ने एंटोफेगस्टा बन्दरगाह में चिली की शोरे की कम्पिनी का कुछ सामान छीन लिया था। इस युद्ध में चिली की विजय हुई और मध्यवर्ती प्रशान्त तट चिली देश के अधिकार में आ गया।

१८९१ ई० में चिली में गृह कलह का आरम्भ हुआ। इसके शान्त होने पर यहां लोकप्रिय प्रजातन्त्र स्थापित हुआ जो अब तक चला आ रहा है।

चिली–दर्शन

वालपरेज़ो

वालपरेज़ो नगर १५३६ ई० में जुआन की सावेड्रा ने बसाया। यह चिली देश का प्रधान बन्दरगाह है। वालपरेज़ो की खाड़ी घोड़े के नाल के समान अर्द्ध वृत्ताकार है। खाड़ी के पीछे एक डेढ़ हज़ार फुट ऊँची सूखी वीरान पहाड़ियां उठी हुई हैं। नगर के कुछ घर पहाड़ियों के नालों के पड़ोस में बने हैं। कुछ घर उस नई ज़मीन पर बने हैं जो समुद्र के नीचे से निकाल कर तयार की गई। इस नई ज़मीन पर बहुत धन व्यय करना पड़ा। यहीं व्यापार गृह बिजली, ट्रम्बे आदि हैं।

वालपरेज़ों की जनसंख्या दो लाख है। केन्द्र होने से यहां योरूपीय व्यापारी बहुत हैं। यहां वे लोग रहते हैं जो उत्तरी प्रदेश के शोरे के कारबार को बढ़ाने की योजना तयार करते रहते हैं। यहीं भेड़ों की वृद्धि करने और रेलवे लाइनों के बढ़ाने की योजना तयार की जाती है। जहाज़, बैंक, बीमा आदि ऊँचे कारबार का संचालन भी यहीं वालपरेज़ो में होता है। वालपरेज़ों के बाहरी भागों में बाटिकाओं से घिरे हुये सैकड़ों बंगले हैं जहां धनी कारबारी दिन भर के परिश्रम के बाद विश्राम लिया करते हैं। वालपरेज़ो के व्यापार की वृद्धि का आरम्भ लिवर

पूल के अंग्रेजों ने किया। वर्षों तक इस नगर का व्यापार अंग्रेजों के हाथ में रहा। फिर यहां कुछ जर्मन व्यापारी आये। अंग्रेजों को यहां के लोग स्कूली लड़के समझते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि धनी अंग्रेज लोग अधिकतर अपना समय टेनिस, क्रिकेट और पोलो के खेल खेलने में बिताते हैं। वे स्पैनिश भाषा सीखने का कष्ट नहीं उठाते हैं क्योंकि अंग्रेजों के अधिकतर मित्र यहां बसे हुये अंग्रेज ही हैं। दफ्तर के समय वे अपना काम ठीक करते हैं।

जर्मन लोग बड़े परिश्रमी होते हैं। वे व्यापार में अधिक समय लगाते हैं। मनोविनोद में बहुत कम समय बिताते हैं। वे स्पैनिश भाषा भी सीख लेते हैं। चिली का कुछ व्यापार संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हाथ में है। बिजली के यन्त्र, इंजीनियरी के सामान और रेलवे इंजिन अधिकतर अमरीका से आते हैं।

फैशन के वस्त्र, आभूषण, भोग-विलास के सामान फ्रांस से आते हैं। चिली का नवयुवक पेरिस को अपना मक्का समझता है। वाल्परेजो में होटल, नाटकघर, सिनेमाघर, क्लब आदि की भर मार है। वाल्परेजों में बिजली के तार जमीन

के भीतर भीतर जाते हैं। वाल्परेज़ो में २५ मील ट्रैम्बे लाइन है। इसमें १० मील नगर के भीतर, शेष नगर के बाहरी भाग में फैली हुई है। इस नगर में प्राय: ७५ ट्रैम कार हैं। इनमें ६० दो मंज़िला हैं। पर प्रशान्त तट पर भूकम्प का भीषण प्रकोप रहता है। वाल्परेज़ो को भी कई बार भूकम्प का भारी धक्का पहुँचा।

सेण्टियागो

यह शहर मापाचो नदी की चौड़ी घाटी में प्रशान्त तट के वाल्परेज़ो बन्दरगाह से ११५ मील की दूरी पर स्थित है। इसके पूर्व में एंडीज़ पर्वत है। एंडीज़ पर्वत की १३,००० फुट ऊंची हिमाच्छादित चोटियां निर्मल आकाश में वर्ष के प्राय: ६ महीनों तक सेंटियागो शहर से दिखाई देती रहती हैं। यह नगर एंडीज़ को पार करने वाली उस रेलवे लाइन पर स्थित है जो वाल्परेज़ो से ब्यूनाज़ायर्स को गई है। यह लाइन १०,८०० फुट ऊंचे अस्पलाटा दर्रे के नीचे एक सुरंग द्वारा एंडीज़ पर्वत को पार करती है। रेलवे बनने के पहले एंडीज़ पर्वत इस भाग में पूरी रुकावट नहीं डालता था। इसी मार्ग से चलकर सैन मार्टिन की देश भक्त सेना ने स्पेन की शाही या जी हुज़ूरों

की सेना को चिली में हराया था। सेंटियागो शहर समुद्र-तल से १८०० फुट की उंचाई पर ३३' ४० अक्षांश पर स्वास्थ्य कर निचली पहाड़ियों पर बसा है। इनमें सेण्टा लूशिया पहाड़ी सर्व प्रसिद्ध है। यूं तो प्राचीन इन्का लोग इधर कई बार आये पर सोने की खोज में मूलनिवासियों की हत्याओं और वेदनाओं की कुछ भी परवाह न करने वाले स्पैनिश लोग १५४१ ई० में यहां आये। यहीं उनके नेता वाल्डिविया ने इस नगर की नींव डाली। आरम्भ का नगर वास्तव में एक छोटा गांव था। इस के झोपड़े उस द्वीप पर बसाये गये जिसे मापाचो नदी की शाखाओं ने बनाया था। आरम्भ में यहां स्पैनिश विद्रोह, रेड इंडियन का आक्रमण, बाढ़ और भूचाल का प्रकोप होता रहा। भूचाल ने कई बार नगर को नष्ट कर दिया। १८१० ई० ईस्वी में सेण्टियागो के मुट्ठी भर देश भक्तों ने स्वाधीनता का संग्राम आरम्भ किया। यह संग्राम कई वर्ष चला। अन्त में चिली देश स्वाधीन हो गया और सेंटियागो शहर चिली प्रजातन्त्र की राजधानी बना।

वर्तमान सेंटियागो शहर ८ वर्गमील भूमि घेरे हुये है। मोपाचो नदी का पानी १२० फुट चौड़ी कृत्रिम धारा से बहाया गया है। इसके दोनों ओर बाढ़ को रोकने के लिये पत्थर की ऊंची दीवारें बनी हैं। नदी के ऊपर पांच पुल बने हैं। सबसे

चिली-दर्शन

पुराना पुल १७६७ ई० में बनाया गया। इसमें ११ महराव हैं। सब से सुन्दर और चौड़ी सड़क एवीनीडाडी लास डेलीसियास कहलाती है। इसके दोनों ओर सुन्दर वृक्ष लगे हैं। इनके पड़ोस में निर्मल पानी की चौड़ी नालियां बहती हैं। यहीं सेंटियागो के धनी लोग रहते हैं। सेंटालूशिया पहाड़ी शहर के ऊपर ४०० फुट ऊंची उठी हुई है। इस पहाड़ी की चोटी से शहर का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। शहर की सड़कें चौड़ी और सुन्दर हैं। इन पर ट्रैम गाड़ियां चला करती हैं। बीच बीच में पार्क या प्लाज़ा है। प्लाज़ा डी अर्मास के सामने शहर का बड़ा केथीड्रल या गिरजा है। यह सब गिरजाघरों में पुराना है। इसकी नींव वाल्डिविया ने डाली थी। वाल्डिविया के गिरजाघर को मेंडोज़ा ने फिर से बनवाया था। पर १६४७ के भूचाल में यह भी नष्ट हो गया। २०० वर्ष बाद यह वर्तमान ढंग से बनवाया गया। यह ३५१ फुट लम्बा और १०२ फुट चौड़ा है। इसका भीतरी भाग बड़ा सुन्दर सजा है। पुस्तकालय, बोटेनीकल गार्डन और चिड़िया घर भी देखने योग्य हैं। सेंटियागो के जिस भाग में राजधानी की सरकारी इमारतें हैं उनके पड़ोस में सुन्दर बगीचे और स्तम्भ हैं। मोनेडा भवन में प्रजातन्त्र का राष्ट्रपति रहता है। कचहरी, कांग्रेस भवन, थियेटर, यूनिवर्सिटी, संगीत शाला और अजायब घर विशाल

इमारतें हैं। सेंटियागो एक बड़ा रेलवे जंकशन है। एक लाइन उत्तर से दक्षिण को जाती है। दूसरी लाइन यहां होकर वाल्परेज़ों से ब्यूनाजायर्स को गई है। सेंटियागो चिली देश का सबसे बड़ा नगर है। इसकी जनसंख्या सवा लाख आठ है।

चिली-यात्रा

चिली देश की कुछ झीलों और पर्वतीय प्रदेश का दृश्य स्विज़रलैंड के समान सुन्दर है। यहां यात्रियों की सुविधा के लिये होटल बने हैं। दक्षिणी चिली में कुछ लोग मछली पकड़ने और शिकार करने के लिये जाते हैं। देश की राजधानी सेण्टियागो से कुछ ही मील की दूरी पर एण्डीज पर्वत के बर्फीले ढालों पर यात्री बरफ पर फिसलने के खेल खेल सकते हैं। पर एण्डीज के ढालों पर बिखरे हुये अराकानो इंडियन गांवों (टेमिको) को बिना देखे चिली देश की यात्रा अधूरी ही रह जाती है। उत्तरी चिली के विकराल शोरे के प्रदेश का देखना भी आवश्यक है। यहां जीवन को सुखदायक बनानेवाली प्राकृतिक सुविधाओं का अभाव है। पर यहां प्राकृतिक सम्पत्ति इतनी अधिक है कि यहां लोग शीघ्राति शीघ्र धनी बनने के लिये एक दूसरे से होड़ लगाते रहते हैं। बादलों से घिरे हुये

चिली-दर्शन

दक्षिणी द्वीप समूह की यात्रा बिना किये चिली देश का पूरा ज्ञान नहीं हो सकता। इस दक्षिणी भाग में कुछ लोग कोयला निकालते हैं। बहुत से लोग भेड़ पालते हैं। कुछ गाय बैल पालते हैं। कुछ थोड़ा गेहूँ भी उगा लेते हैं। पंटा एरीनाज दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी ध्रुव के सब से अधिक निकट बस्ती है। चिली देश दक्षिणी अमरीका में सब से अधिक मेस्टिजो या वर्ण संकरों का देश है। यहाँ स्पैनिश विजेताओं और मूल निवासी वीर अराकानो इंडियन लोगों का रुधिर एक दूसरे से भली भांति मिल गया है। वर्तमान चिलीवासी अपने पूर्वजों को ऐसा भूल गया है कि वह स्पेनिश विजेताओ और अराकानों इंडियन लोगों से कुछ भी सहानुभूति नहीं रखता है। अधिकतर चिली निवासी प्राचीन अराकानों संस्कृति को मिटाने पर तुले हुये हैं। वे अराकानों इंडियन लोगों को योरूपीय पोशाक पहनने के लिये वाध्य करते हैं। अतः अब सुन्दर चांदी की चद्दर का बख्तर पहने हुये बहुत कम अराकानों लोग मिलेंगे। अराकानो ढंग के बने हुये आभूषण और वस्त्र भी लुप्त होते जा रहे हैं। पर अराकानो लोगों की अमिट छाप देश पर लगी हुई है। वे ७०० वर्ष तक अपनी स्वाधीनता के लिये लड़ते रहे। उन्होंने अब से केवल ६० वर्ष पूर्व चिली प्रजातन्त्र से सम्मानपूर्ण समझौता किया। इस बराबरी की सन्धि के

अनुसार उनके भूमि, शासन और संस्कृति सम्बन्धी अधिकार सुरक्षित हैं।

टेमिको एक उजड़ा हुआ नगर है। यहां इंडियन लोग भली भांति देखे जा सकते हैं। पर इक्वीक और एण्टोफेगस्टा की नृत्यशालाओं और सेंटियागो के अजायब घरों को देखने के बाद टेमिको का दर्शन चिली देश का इतिहास सामने खड़ा कर देता है।

बादामी रंग के रेगिस्तान और एंडीज की बीहड़ शिलाओं से युद्ध करते करते चिलीवासियों में अपनी स्वाधीनता के लिये मर मिटने की भावना नस नस में समा गई है। वे सैनिक प्रकृति के हो गये हैं। कभी कभी सैनिकों का उजड्डपन उनमें दिखाई देता है। वे बड़े मितव्ययी हैं। एक शिला के नीचे एक चिली वासी की एक पेनी (इकन्नी) गिर गई। उसने इकन्नी ढूंढ़ने के लिये पूरी शिला को काट कर इकन्नी निकाल ली।

चिली का मध्यवर्ती भाग अंगूरी बगीचों और खेतों से भरा पड़ा है। इस भाग को स्वर्ग की घाटी कहते हैं। पर इस भाग में भी इतना अन्न पैदा नहीं होता है कि समस्त चिली देश का पेट भर सके। यह स्वर्गीय घाटी उत्तर में रेगिस्तान, पूर्व में पहाड़ और दक्षिण में कुहरा से ढके हुये वन से घिरी

है। जैसे रेगिस्तान में छोटा मरूद्यान होता है वैसे ही चिली के वीहड़ देश में मध्यवर्ती उपजाऊ घाटी भी बहुत ही थोड़े भाग में सीमित है।

चिली देश की रेलवे लाइन अधिकतर देश भक्ति के भाव से बनी हैं। इनके बनाने और इनको चालू रखने में इतना खर्च होता है कि इनसे लाभ की आशा नहीं है। यह सेना भेजने के लिये उपयोगी हैं। पर इनसे देश की रक्षा होती है। दूर बिखरे हुये भाग एक दूसरे से जुड़े हुये हैं। इस लिये चिली वासियों को इन पर अभिमान है। अधिकतर रेलवे लाइनों और शोरे की कम्पिनियों में इंगलैंड की पूंजी लगी है। यहां के बैंक इंगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हाथ में है। चिली देश दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। इसलिये चिली की यात्रा में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जब अपने देश में पौस-माघ में जाड़ा पड़ता है तभी इन महीनों में यहां गरमी की ऋतु होती है। जेष्ट आषाढ़ में यहां जाड़ा पड़ता है।

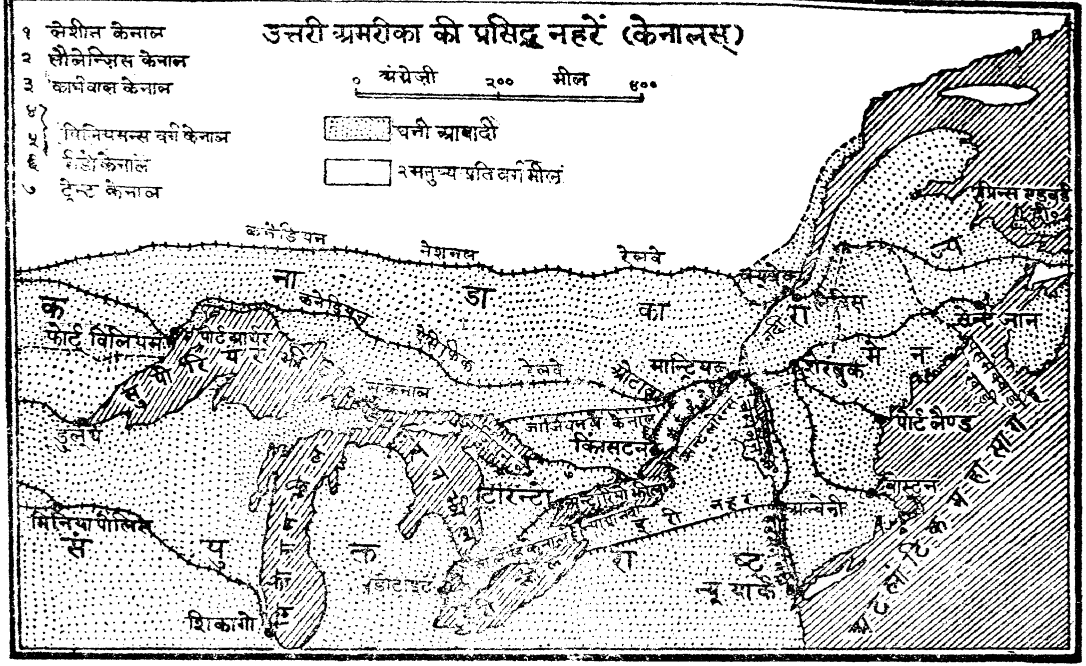
ट्रान्स एण्डाइन या एण्डीज पर्वत को पार करने वाली रेलवे वाल्परेज़ो से आरम्भ होती है। पहले बड़ी सुखप्रद इक्सप्रेस ट्रेन (रेलगाड़ी) मिलती है। यह गाड़ी सेंटियागो होती हुई लैलाई को आती है फिर यहां से गाड़ी लास एण्डीज को जाती है। यहां तक गाड़ी काफी तेज आती है। फिर यहां से नेरो गेज या छोटी (पहाड़ी) लाइन मिलती है जैसे अपने यहां शिमला या दार्जिलिंग को जाने के लिये मिलती है। कई सुरंगो के भीतर और पुलों के ऊपर से चलती हुई गाड़ी रिओ ब्लांको पहुँचती है। मार्ग बहुत तंग है। इसलिये प्रबल वर्षा

में इधर उधर की शिलाओं के गिरजाने पर मार्ग रुक जाता है। यहां से गाड़ी जंकाल को जाती है। पहले यहां से खच्चर पर सवार होकर तंग मार्ग से जाता था। आज कल इस ओर भी छोटी पहाड़ी रेलवे लाइन अर्जेण्टाइना की सीमा के पास लास क्यूवास तक गई है। इसके आगे अर्जेण्टाइना प्रजातन्त्र को पार करता हुआ यात्री ब्यूनाजायर्स बन्दरगाह में पहुँच जाता है।

वालपरेज़ो बन्दरगाह से लैलाई जंकशन तक कुछ खुश्क पहाड़ी प्रदेश है। नदियों के पड़ोस में चरागाह हैं पहाड़ी ढालों पर झाड़ियां और छोटे पेड़ हैं। अधिक आगे पहाड़ियों की ऊंचाई बढ़ जाती है। यहां सुन्दर फूल और चरागाह मिलते हैं। ब्यूनाजायर्स से मैगोलन प्रणाली के मार्ग से वाल्प-रेज़ो पहुँचने में जहाज़ को ११ दिन लग जाते हैं। पर रेल से यह यात्रा ४० घंटे में समाप्त हो जाती है। सेंटा रोसा में यात्री आराम से सोते हैं। यहां से मेंडोजा के लिये सप्ताह में केवल तीनबार रेलगाड़ी जाती है। ट्रेनें बड़े सवेरे चलती है और १२ घंटे में मेंडोज़ा पहुँचा देती है। सड़क रेलवे के समानान्तर चलती है। लास क्यूबास के पास उतार है। पुयेण्टा डेल इन्का या इन्का पुल के पास गरम पानी के सोते हैं। इनमें स्नान करने से कई रोग अच्छे हो जाते हैं। गरमी की ऋतु में यहां कुछ यात्री स्नान करने आते हैं।



चिली का वालपरेजो बन्दरगाह


उत्तरी अमरीका की प्रसिद्ध नहरें (केनालस्)
१ लेशीन केनाल
२ सौलेन्जिस केनाल
३ कार्नवाल केनाल
४
५ विलियमस्स वर्ग केनाल
६ रिडो केनाल
७ ट्रेन्ट केनाल
० अंग्रेजी २०० मील ४००
घनी आबादी
२ मनुष्य प्रति वर्ग मील
कनेडियन नेशनल रेलवे
ना डा का
फोर्ट विलियम
पोर्ट आर्थर
डुलथ
मिनियापोलिस
शिकागो
टोरन्टो
किंग्सटन
मान्ट्रियल
क्यूबेक
पोर्टलैण्ड
बोस्टन
अल्बेनी
न्यू यार्क
एरी नहर
सेन्ट जान
जार्जियन केनाल

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल	२।)	२१—टर्की	१)
२—भूतत्व	१॥)	२२—अफ़ग़ानिस्तान	१)
३—भूगोल एटलस	१॥)	२३—भुवनकोष	१)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति	१)	२४—पृथ्वीर्मापनिया	।॥)
५—मिडिल भूगोल भाग १—४ मूल्य प्रत्येक भाग	।॥)	२५—गंगा-अंक	१)
६—हमारा देश	॥=)	२६—गंगा-एटलस	॥)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण)	१।)	२७—देशी राज्य-अंक	२॥)
८—हमारी दुनिया	॥)	२८—पशु-पक्षी-अंक	१)
९—देश निर्माता	॥)	२९—महासमर-अंक	१।)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग	।)	३०—महासमर एटलस	॥)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग	।)	३१—सचित्र भौगोलिक कहानियां	॥)
१२—जातियों का कोष	॥)	३२—पशु-परिचय	॥)
१३—अनोखी दुनिया	।॥)	३३—प्राचीन जीवन	॥)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस	१)	३४—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन)	३)
१५—संसार-शासन	२।)	३५—मेरी पोथी	॥=)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण)	१।)	३६—आसाम-अंक	१)
१७—स्पेन-अंक	१)	३७—द्वितीय महासमर-परिचय	१॥)
१८—ईरान-अंक	१)	३८—संयुक्त प्रांत-अंक	३॥)
१९—चीन-अंक	१)	३९—महासमर दैनन्दिनी डायरी	२)
२०—चीन-एटलस	॥)	४०—भारतीय भाषाएँ	१)
		४१—नागरिक दर्शन	॥=)
		४२—मेरी पोथी	॥=)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय ककरहाघाट इलाहाबाद ।